वार्तालाप-586, ताडेपल्लिगुडम, दिनांक 19.06.08
Disc.CD No.586, dated 19.06.08 at Tadepalligudem
Extracts-Part-1

समयः 00.05-02.20

जिज्ञासुः बाप, आज दो बात आयी। सभी प्रश्नों को छोड करके पुरुषार्थ करना है। आज की मुरली में आया। और दूसरी बात, कोई बात नहीं समझ में आए तो बाप से पूछना। दो बात है ना बाप ।

बाबाः एक ही बात है। दो बातें कहाँ हुईं?

जिज्ञासुः एक है प्रश्नचित्त नहीं बनना। प्रसन्नचित्त बनो।

बाबाः हाँ, प्रसन्नचित्त बनना अलग बात। और संशय लाना अलग बात। प्रसन्नचित्त है कोई, लेकिन प्रसन्नचित्त होते हुए भी कोई मंदबुद्धि है, बात समझ में नहीं आती है तो सच्चे साफ दिल से पूछ सकता है। एक होता है अनिश्चयबुद्धि। अनिश्चयबुद्धि हुआ दिल साफ नहीं हुआ। दिल में कालापन भरा हुआ है। वो अलग बात है।

जिज्ञासुः बाप, जैसा बाप समझाते हैं वैसा बच्चा नहीं समझा सकता। उसका यादगार है...

बाबाः एक की बात दूसरे के मुख में जाएगी तो बात का रूप बदल जाता है। कोई न कोई अक्षर बदल जाएगा, वायब्रेशन बदल जाएगा, दृष्टि वृत्ति बदल जाएगी। अर्थ बदल जाएगा। फिर समझाने वाले का वायब्रेशन कुछ और समझने वाले का वायब्रेशन कुछ और हो जाता है, वायुमण्डल कुछ और हो जाता है। घड़ी-घड़ी वायुमण्डल बदलता रहता है। उसमें भी फर्क पड़ जाता है।

Time: 00.50-02.20

Student: Father, today two things were mentioned. We have to make *purusharth* leaving all the questions aside. It was mentioned in today's murli. And secondly, if we do not understand anything, we should ask the Father. These are two (contradictory) things, aren't they Father?

Baba: They are one and the same. How are they two different things?

Student: One thing is, not to raise questions (*prashnachitt*); become joyful (*prasannchitt*).

Baba: Yes. Becoming joyful is a different thing and having doubts is a different thing. If someone is joyful but despite being joyful if someone is dull-headed, he is unable to understand, he may ask with a truthful and clear heart (*saafdil*). One thing is being the one with a doubtful intellect. If he has a doubtful intellect, his heart is not clean, darkness (negativity) is filled in his heart; that is a different thing.

Student: Father, a child cannot explain the same way as the Father explains. Its memorial is...

Baba: When the words of a person are said through another person's mouth, the form of the words change. One or the other word will change, the *vibration* will change, the vision and attitude [with which it is said] will change. The meaning will change. Then the *vibration* of the one who explains becomes different and the vibration of the one who understands becomes different [and] the atmosphere becomes different. The atmosphere keeps changing every moment. A difference arises in it as well.

समयः 04.25-08.30

जिज्ञासुः ब्रह्मा ने अपने आपको गीता का भगवान समझते हैं। कृष्ण वाली आत्मा। वो हिरण्यकश्यप बोले हैं ना बाबा।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः जो भी अपने को भगवान कहता है, भगवान समझता है, उनको बाबा कहते ये हैं हिरण्याकश्यप।

जिज्ञासुः अब ब्रह्मा ऐसा समझते हैं ना मैं ही गीता का भगवान हूँ।

बाबाः गीता का साकार भगवान जिसके मुख से गीता ज्ञान सुनाया जाता है... गीता ज्ञान तो मुख से ही सुनाया जाएगा ना। तो वो साकार मुख जो गीता का भगवान है उसे आत्मा स्वीकार करेगी ना। कौन है गीता का साकार भगवान?

जिज्ञासुः शिव शंकर भोलेनाथ।

बाबाः हाँ, जी।

जिज्ञासुः लेकिन अभी ब्रह्मा समझते हैं ना अपने आपको।

बाबाः अभी भी। 63 जन्मों के संस्कार हैं। वो सूक्ष्म शरीर होने पर भी अडिग है।

Time: 04.25-08.30

Student: Brahma considers himself to be the God of the Gita; the soul of Krishna. Baba said that he is Hiranyakashyap, hasn't He?

Baba: Whoever calls himself God, or considers himself to be God, Baba says that he is Hiranyakashyap.

Student: Now Brahma thinks that he is the God of the Gita, doesn't he?

Baba: The corporeal God of the Gita through whose mouth the knowledge of the Gita is narrated... the knowledge of the Gita will be narrated through the mouth only, will it not? So, the soul will accept that corporeal mouth, who is the God of the Gita, will it not? Who is the corporeal God of the Gita?

Student: Shiva Shankar *Bholenath*[1].

Baba: Yes.

Student: But now Brahma considers himself (as the God of the Gita), doesn't he?

Baba: Even now. There are the *sanskars* of 63 births. He is unshakeable [on this thing] despite being in a subtle body.

जिज्ञासु: तो हिरण्यकश्यप हो गया ना बाबा।

बाबा: ठीक है।

जिज्ञासुः तो ऐसी हिरण्यकश्यप जब गुल्ज़ार दादी में प्रवेश करके वाणी चलाती है, उस वाणी को बाप क्यों महत्व देते हैं? उसको प्रोज़ कहा है।

बाबाः जैसे फिल्मों में फिल्मी गीत आये हैं। फिल्मी गीत जिन्होंने बनाए हैं, सदैव उनकी भाव-भंगिमा एक जैसी नहीं होती है। कभी सात्विक स्टेज भी होती है। वो सात्विक स्टेज सतोप्रधान परमपिता परमात्मा के ही वायब्रेशन होते हैं। उन्होंने बनाते समय उन फिल्मों के गीतों के अर्थ को नहीं समझा था। उन्हीं अर्थों को बाप आकरके समझाते हैं। वो ही शास्त्रों के महावाक्य जिनमें सच्चाई भरी हुई है वो सतोप्रधानता की स्टेज जिन मनुष्य गुरुओं ने वो मनुष्य कवियों ने, वो शास्त्र के ऋगवेद या ऋचायें तैयार की थीं, वो नहीं जानते थे कि वो वास्तव में क्या बोल रहे हैं। उसका सही अर्थ बाप आके बताते हैं। माना वो सतोप्रधानता की जो भी स्टेज उस समय थी वो बाप की स्टेज है, याद की स्टेज है। उनकी अपनी स्टेज नहीं है।

---

[1] The lord of the innocent ones

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः ब्रह्मा की याद........

बाबाः ब्रह्मा की सोल भी सतोप्रधान, सतोसामान्य, रजो और तमो - चार अवस्थाओं से पसार होती है। जब गुल्ज़ार दादी में प्रवेश करती है उस समय तो विशेष याद की स्टेज में होते हैं।

Student: Baba, so he is Hiranyakashyap, isn't he?
Baba: Ok.
Student: So, when such Hiranyakashyap narrates the *vani* after entering in *Dadi* Gulzar, why does the Father give it importance? It is called prose.
Baba: For example, there are film songs in the films. The meanings of those who have composed the film songs are not always alike. Sometimes the stage is *satvic*[2] as well. That *satvic* stage is the *vibration* of the Supreme Father Supreme Soul Himself. They did not understand the meanings of those film songs while composing those songs. The Father explains the same meanings when He comes. The same versions of the scriptureswhich are filled with truth; the human gurus, the human poets who prepared those scriptures, Rigveda, or hymns in the *satopradhan* stage didn't know actually, what they are saying. The Father tells its correct meaning when He comes. It means that their *satopradhan* stage at that time is the stage of the Father, it is the stage of remembrance. That is not their stage.
Student: Brahma's remembrance...
Baba: Brahma's *soul* also passes through the four stages - *satopradhan, satosamanya, rajo* and *tamo*. When it enters *Dadi* Gulzar, it is in a special stage of remembrance.

जिज्ञासुः किसके रूप में बाप? माना साकार में निराकार की याद होती है या सिर्फ बिन्दु की याद होती है।

बाबाः साकार में निराकार की याद नहीं होती है क्योंकि वो देहअभिमानी स्वरूप है, सूक्ष्म शरीर से प्रवेश करने वाला। लेकिन कभी-कभी ऐसा होता है कि जो धर्मपितायें हैं वो भी इस सृष्टि पर उतरते हैं तो जो वाक्य बोलते हैं उनमें सच्चाई भरी हुई होती है। वो सच्चाई उन्होंने संगमयुग में इसी समय पकड़ी है। वो सच्चाई बोलते है।

जिज्ञासुः सिर्फ बिन्दु की याद से बाबा?

बाबाः हाँ, जी। क्या आँखों में परिवर्तन नहीं देखा निराकारी स्टेज का? किसमें? गुल्ज़ार दादी में। धर्मपिताओं में तो होता ही है। लेकिन गुल्ज़ार दादी की आँखों में परिवर्तन नहीं देखा? चेहरे मोहरे में परिवर्तन हो जाता है। वो परिवर्तन साधारण भूत-प्रेतों जैसा नहीं होता।

Student: Father, in which form? Meaning, is there the remembrance of the incorporeal one within the corporeal one or is there the remembrance of only the point?
Baba: It is not the remembrance of the incorporeal one within the corporeal one because that is a body conscious form, the one who enters through a subtle body. However, sometimes it happens that there is truth even in the words spoken by the religious fathers, who descend in this world. They have grasped that truth in the Confluence Age at this very time. They speak truth.
Student: Baba, [is it] just through the remembrance of the point.
Baba: Yes. Did you not see the change in [the state of] eyes in the incorporeal stage? In whom? In *Dadi* Gulzar. It does exist in the religious fathers, but did you not see the transformation in the eyes of *Dadi* Gulzar? The facial expressions change. That transformation is not like the ordinary ghosts and spirits.

---
[2] Endowed with the quality of *sattva*: true, genuine, virtuous, excellent

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 08.35-09.40

जिज्ञासुः बाबा एक प्वाइंट है। जहाँ हमारा तन होगा, वहाँ हमारा मन होगा।

बाबाः धन हो, तन हो।

जिज्ञासुः धन। लेकिन कुछ बच्चे धन का विशेष सेवा करते हैं, महल-माडी देते हैं सर्विस के लिए।

बाबाः सारा तो नहीं देते हैं। सारा महल माडी तो नहीं अर्पण कर देते। अगर सारा ही अर्पण कर दें तन और धन तो मन भी सारा कहाँ जावेगा? सारा ही वहाँ चला जावेगा। ऐसा अर्पण करने वाला वो तो यज्ञ की हिस्ट्री में ब्रह्मा ही प्रत्यक्ष रूप में देखने में आया। प्रजापिता का तो पता भी नहीं चला, क्या आया, क्या गया? वो तो बाप ने बताया।

Time: 08.35-09.40
Student: Baba, there is a point. Our mind shall be where our body is.
Baba: It could be wealth or body.
Student: Wealth. But some children do special service through wealth. They give palaces and buildings for service.
Baba: They do not give it entirely. They do not surrender all the palaces and buildings [they have]. If they surrender the body and wealth entirely, where will the mind also go completely? It will go in that direction completely. In the *history* of the *yagya*, it was Brahma alone who was revealed as the one to surrender like this. It was not at all known about Prajapita, regarding what he gave and what he left? The Father told about it.

Extracts-Part-2

समयः 10.30-12.20

जिज्ञासुः ज्ञान में आने के बाद शरीर छोड़ते हैं ना। वो आत्मायें ज्ञान लेते हैं या नहीं?

बाबाः जो ज्ञान में आने के बाद शरीर छोड़ते हैं वो ज्ञान के संस्कार ले जाते हैं और जहाँ कहीं भी जन्म लेंगे, जन्म लेने के थोड़े समय के बाद ही उनके ज्ञान के संस्कार देखने में आवेंगे।

जिज्ञासुः ज्ञान में आवेंगे क्या?

बाबाः ज्ञान में आयेंगे। ना आये ये सवाल ही नहीं उठता। जैसे राम वाली आत्मा का मिसाल दिया। ये ज्ञान विनाशी है या अविनाशी? अविनाशी ज्ञान है। इसका विनाश नहीं होता। वो इंजीनियरिंग की पढ़ाई तो यहाँ पढ़ लो। डिग्री ले लो। और मर गये तो सब खलास। फिर दूसरे जन्म में नए सिरे पढ़नी पडे। यहाँ तो अगर कोई आत्मा पढ़ाई पढ़ते-पढ़ते शरीर छोड़ती भी है तो भी पढ़ाई का तंत उसकी आत्मा के साथ ही जावेगा। जहाँ कहीं भी जाके जन्म लेगी और ज्ञान में आके जन्म लिया और वो ही स्टेज पकड़ लेगी, निराकारी स्टेज की। ज्ञान में आने मात्र से ही वो निराकारी स्टेज, उतनी स्टेज की पकड़ लेगी, जितनी पढ़ाई पढ़ी होगी। जैसे राम वाली आत्मा।

Time: 10.30-12.20
Student: People leave their body after entering the path of knowledge, don't they? Do those souls obtain knowledge or not?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Those who leave their body after coming in knowledge carry the *sanskars* of knowledge and wherever they are born, their *sanskars* of knowledge will be visible soon after they are born.
Student: Will they come in knowledge?
Baba: They will come in knowledge. The question of their not coming [in knowledge] does not arise at all. Just like, the example of the soul of Ram was given. Is this knowledge perishable or imperishable? It is an imperishable knowledge. It is not destroyed. In case of that knowledge of *engineering*, you study it here, obtain the *degree* and if you die, then everything perishes. Then you will have to study it afresh in the next birth. Here, even if a soul leaves its body while studying [the knowledge], the essence of the knowledge will go with the soul itself. Wherever it is born and as soon as it is born in knowledge, it will reach that stage, that incorporeal stage. As soon as it comes in knowledge, it will achieve that incorporeal stage to the extent it had studied the knowledge [in the previous birth]. Just like the soul of Ram.

समयः 12.35-16.37
जिज्ञासुः कुत्ता जो है...
बाबाः कुत्ता, डॉग? हाँ।
जिज्ञासुः एक है गॉडली पढ़ाई, एक है डॉगली पढ़ाई।
बाबाः हाँ, जी।
जिज्ञासुः ये जानवर को क्रिश्चियन लोग जास्ती पालते हैं ना ।
बाबाः कुत्ते को?
जिज्ञासु: कुत्ते को।
बाबा: हाँ, जी।
जिज्ञासुः लेकिन कुत्ते, बाबा क्या कहते हैं, कुत्ते हैं काम विकार की निशानी।
बाबाः वायब्रेशन काम विकार का बनाने वाले हैं। हाँ, जी। उनके सानिध्य से, उनके वायब्रेशन से, उनका जो वायुमण्डल बनता है वो काम की मेन्टलिटी का वायुमण्डल होता है। इसलिए हिन्दु लोग कुत्तों को अपने घर में पालना पसन्द नहीं करते हैं। और क्रिश्चियन्स में काम विकार को बढ़ावा देते हैं या उसको घटाते हैं?
Time: 12.35-16.37
Student: The dog (*kutta*)...
Baba: *Kutta*, *dog*? Yes.
Student: One is Godly knowledge[3], one is Dogly knowledge[4].
Baba: Yes.
Student: Christians rear this animal more, don't they?
Baba: The dogs?
Student: The dogs.
Baba: Yes.
Student: But Baba says that dogs are a sign of lust.
Baba: They create vibrations of lust. Yes. The atmosphere created by their presence, by their vibrations is an atmosphere of *mentality* of lust. This is why Hindus do not like to rear them in their house. And do Christians encourage lust or reduce it?

[3] Divine knowledge; which makes a person like deities
[4] Worldly knowledge; which makes a person like dogs

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: काम विकार को प्रतिनिधित्व करने वाला इस्लामी है ना।

बाबा: हाँ।

जिज्ञासु: तो इस्लामी क्यों नहीं जास्ती पालते?

बाबा: इसलिए कि क्रिश्चियन्स जो हैं, जो सेनापति अपना बनायेंगे ना वो सेनापतियों में भी वो स्टेज ज्यादा होगी। ये विकारियों का सेनापति है। जितना अच्छा युद्ध मुसलमान करते हैं, उतना अच्छा युद्ध क्रिश्चियन्स नहीं करते हैं। युद्धकला में इस्लामी बहुत तीखे जाते हैं।

जिज्ञासु: लेकिन ये उसको (कुत्तों को) जास्ती पालना करना है ना क्योंकि काम विकार उसमें जास्ती होती है। काम विकार कुत्ते में जास्ती होती है। इसलिए इस्लामी जास्ती पालना करना है।

बाबा: इसलिए पालना करते हैं (क्रिश्चियन्स) क्योंकि वो ठण्डे प्रदेशों के रहने वाले हैं। ठण्डे प्रदेशों में काम विकार उतना पनपता नहीं है। तो उसको ज्यादा पनपाने के लिए जानवर को अपने साथ रखेंगे तो वायब्रेशन और ज्यादा खराब होगा। (जिज्ञासु: क्रिश्चियनों का।) हाँ, जी।

Student: The people of Islam represent lust, don't they?

Baba: Yes.

Student: So, why don't the people of Islam rear them more?

Baba: It is because the person whom Christians make their commander will be more in that stage [of lust]. He is the commander of vicious people. Christians do not fight wars as efficiently as the people of Islam. The people of Islam are very sharp in the art of war.

Student: But they (i.e. the people of Islam) should rear them (i.e. dogs) more, shouldn't they? Because they are more lustful. Dogs are more lustful. This is why the people of Islam should rear them more.

Baba: They (i.e. the Christians) rear them more because they live in cold regions. Lust does not flourish more in cold regions. So, in order to get it flourished, they keep that animal with them; then their vibrations will become worse. (Student: The Christians.) Yes.

जिज्ञासु: लेकिन ये काम विकार की निशानी है ना। तो इस्लामी काम विकार को प्रतिनिधित्व करने वाला वो जास्ती उसको पालना करना है। इस्लामी वाला जास्ती पालना करना है कुत्तों को। क्योंकि काम विकार को प्रतिनिधित्व करने वाला इस्लामी है और काम विकार जास्ती कुत्ते में रहती है। क्रोध विकार का प्रतिनिधित्व करने वाला वो क्रिश्चियन लोग हैं। क्रिश्चियन लोग क्यों कुत्ते को दिखाते हैं?

Student: But this is a sign of lust, isn't it? So, the people of Islam, who represent lust, should rear them (i.e. dogs) more. The people of Islam should rear dogs more because people of Islam represent lust and dogs are more lustful. Christians represent anger. Why are Christians shown with dogs?

बाबा: इसीलिये पालते हैं क्रिश्चियन लोग कुत्ते को, कि उनमें अपने अन्दर की जो रग है वो ठण्डे प्रदेशों की होने के कारण काम विकार की नहीं है। अगर वो काम विकार को उत्तेजित नहीं करेंगे तो उनकी जनसंख्या कम रह जावेगी दुनिया के मुकाबले। हाँ। और क्रिश्चियन्स की मेन्टेलिटी ये है कि हमारी जनसंख्या जितनी संसार में बढ़ेगी उतना हम विश्व विजयी बनेंगे। वो

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जनशक्ति को बढ़ावा देने वाला धर्म है। इसलिए कुत्तों को पालने से समझते हैं कि हमारे अन्दर काम विकार ज्यादा बढ़ेगा और ज्यादा जेनरेशन पनपेगी क्रिश्चियन्स की। और हम विश्व विजयी बन जावेंगे। ब्रह्मा बाबा की भी ये ही मेन्टेलिटि रही। माताओं की भी आज की दुनिया में यही मेन्टेलिटि होती है कि सारे बच्चे हमारे कंट्रोल में आ जायें। बहुत प्यार देगी एक्स्ट्रा आर्डिनरी।

जिज्ञासुः श्रीमत के अनुसार नहीं है ये।

बाबाः हाँ, जी।

Baba: The Christians rear dogs because, due to being the residents of cold regions, they do not have an inner urge for lust. If they do not stimulate lust, then their population will be small when compared to the [population of the] world. Yes. And the *mentality* of Christians is that the more their population increases in the world, the more they will become the conquerors of the world. It is a religion that promotes people power (*janshakti*). This is why they think that if they rear dogs, their lust would increase and the *generation* (i.e. population) of Christians would flourish and they will become the conquerors of the world. Brahma Baba also had the same *mentality*. In today's world, the mothers also have the same *mentality* that all the children should come in their *control*. They will give a lot of *extra ordinary* love.
Student: This is not as per shrimat.
Baba: Yes.

Extracts-Part-3

समयः 17.20-23.35

जिज्ञासुः इस समय भारत पूरा नास्तिक है। और भारत साकार में बाप है।

बाबाः इस समय भारत पूरा नास्तिक है। जो पूरा पतित होगा वो ही पूरा पावन बनेगा। जो पूरा आस्थावान होगा वो ही पूरा नास्था, ना आस्था; कोई मनुष्य मात्र पर उसको आस्था नहीं। सब झूठे हैं। तो गलत बात है या अच्छी बात है? इस कलियुगी दुनिया में अंत में आकरके जब सब धर्मों में अधर्म छा गया, और भगवान इस सृष्टि पर है नहीं, ट्रुथ गॉड फादर इस दुनिया में है नहीं तो कोई मनुष्य के ऊपर आस्था रख लेना अच्छी बात है या खराब बात है?

जिज्ञासुः सब अधर्मी है तो आस्था रखना अच्छी नहीं है ना।

बाबाः हाँ, जी। इसलिए राम की आत्मा के लिए बोला भारत इस समय पूरा नास्तिक है। अच्छी बात है ना। लेकिन अगर बाप की पूरी पहचान हो जाए तब आस्थावान होना अच्छी बात है या खराब बात है?

जिज्ञासुः आस्था माना बाप के ऊपर?

बाबाः बाप के ऊपर। हाँ, जी।

जिज्ञासुः अच्छी बात है।

Time: 17.20-23.35
Student: At this time Bharat is completely atheist (*naastik*). And the Father is Bharat in the corporeal form.
Baba: At this time Bharat is completely atheist. The one who is completely impure, he alone will become completely pure. The one, who is completely theist (*aasthavaan*) himself, will become completely atheist (*nastha*), no *astha* (faith). He does not have faith in any human being. Everyone is false. So, is it good or bad? In this Iron Age world, when irreligiousness

spreads in all the religions in the end, and God is not in this world, the true *God* the *Father* is not present in this world, so is it good to have faith in any human being or not?
Student: When everyone is irreligious, it is not good to have faith [in any human being], isn't it?
Baba: Yes. This is why it has been said for the soul of Ram that Bharat is completely atheist at this time. It is good, isn't it? But if someone recognizes the Father completely, is it good to have faith or is it bad?
Student: Do you mean to say faith on the Father?
Baba: On the Father. Yes.
Student: It is good.

बाबाः अच्छी बात है। इस समय, इस समय मुरली में आता है भारत पूरा नास्तिक है। पूरा माना वन परसेन्ट भी किसी मनुष्य मात्र के ऊपर आस्था है या नहीं है? (जिज्ञासु - नहीं है।) नहीं है। होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए? (जिज्ञासुः नहीं होनी चाहिए।) नहीं होनी चाहिए? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) होनी चाहिए किसी मनुष्य के ऊपर आस्था। अगर किसी मनुष्य के ऊपर आस्था नहीं है इसका मतलब क्या होता है? अपनी मनमानी करेगा। मोनार्की चलाएगा। किसी की बात नहीं मानेगा। अगर किसी एक के ऊपर आस्था होगी तो उसकी बात मानेगा। तो अभी आस्था होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए?
जिज्ञासुः आस्था होनी चाहिए बाप पर।
बाबाः बाप तो निराकार, बिन्दी है। अरे आस्था माने किसके ऊपर आस्था? किसके ऊपर आस्था? बिन्दी के ऊपर या बिन्दी कोई साकार के द्वारा आस्था? (जिज्ञासु - साकार के द्वारा।) वो कौन? (जिज्ञासुः शिवबाबा है ना।) नहीं, शिवबाबा वो तो खुद ही हो गया फिर। या तो वो अपन को माने, स्वीकार करे, शिवोहम। तब क्या?
Baba: It is good. 'At this time'…It is mentioned in the murlis, 'at this time' Bharat is completely atheist. 'Completely [atheist]' means, does he have even one *percent* faith in any human being or not? (Student: He doesn't.) He doesn't. Should he have or should he not? (Student: He should not.) Should he not? (Student said something.) He should have faith in some human being. If he does not have faith in any human being, what does it mean? He will do as he likes. He will practice *monarchy*. He will not accept anyone's words. If he has faith in some person, he will accept his words. So, should he now have faith (in a human being) or not?
Student: He should have faith on the Father.
Baba: The Father is incorporeal, a point. *Arey*, faith means faith in whom? Faith in whom? Is it in the point or is it faith in the point through a corporeal one? (Student: Through the corporeal one.) Who is he? (Student: It is Shivbaba, isn't it?) No, then he himself is Shivbaba. Either he should accept himself [as Shivbaba], *Shivoham* (I am Shiv); then what?

जिज्ञासु- वैष्णवी।
बाबाः हाँ, जी। वैष्णवी मैदान में आए तब न सच्चाई को स्वीकार करे। वैष्णवी अगर खुद ही सच्चाई को स्वीकार नहीं करती, एडवांस नॉलेज को स्वीकार नहीं करती, तो उसके ऊपर आस्था कैसे जमाई जाए? (जिज्ञासु- जब आती है तब आस्था।) तब की बात अलग। (जिज्ञासु- किसी पर आस्था नहीं रखना है?) अब जो पान का बीडा उठा ले। (जिज्ञासु- बच्चों में से?) हाँ, हाँ, बच्चों में से कोई भी बच्चा, बेसिक नालेज का बच्चा, एडवांस नालेज का बच्चा। (जिज्ञासुः कृष्ण बच्चा।) कृष्ण बच्चा तो है ही नहीं मौजूद। वो तो साकार शरीर से है ही नहीं। जिसके द्वारा

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

साकार शरीर से काम करता है वो तो फ्रंट में हो गई। (जिज्ञासु- जगदम्बा।) वो तो फ्रंट में आ गई। हम सब खेड़-बखेड़ा कर देंगे, बिगाड़ देंगे सब। हमने ही घर बनाया है, हम ही घर को उजाड़ देंगे। सबको अनिश्चयबुद्धि बना देंगे। उसके ऊपर आस्था रख ली जाए? अरे आस्था स्थापनाकारी के ऊपर रखी जाए या विनाशकारी के ऊपर रखी जाए? (जिज्ञासु - स्थापनाकारी।) फिर? स्थापना प्योरिटी से होगी या स्थापना इम्प्योरिटी से होगी? प्योरिटी से होगी। तो प्योरिटी वाला मैदान में आना चाहिए ना। अभी आपके पूछने का सवाल रह गया? इसलिए तो बोला विजयमाला का आवाहन करो। और कोई में ये दम नहीं है।

Student: Vaishnavi.

Baba: Yes. It is when Vaishnavi comes in the field she will accept the truth, won't she? If Vaishnavi herself does not accept the truth, if she does not accept the Advance Knowledge, how can faith be developed in her? (Student: Faith is developed when she comes.) That is a different case for that time (when she comes). (Student: shouldn't there be faith in anybody?) Well, it depends on whoever takes up the responsibility. (Student: is it from among the children?) Yes, yes, any child from among the children themselves, any child from Basic Knowledge, any child from Advance Knowledge. (Student: child Krishna.) Child Krishna is not at all present. He is not at all present in the corporeal body. The one through whom he works with a corporeal body has come in *front* (i.e. opposition). (Student: Jagdamba.) She has come in *front*. [She says], "I will create turmoil, I will spoil everything. It is I who has set up the home; I myself will ruin the home. I will make everyone with a doubtful intellect." Should we have faith in her? *Arey*, should we have faith in someone who brings establishment or should we have faith in the one who is destructive? (Student: the one who brings establishment.) Then? Will the establishment happen through *purity* or through *impurity*? It will happen through *purity*. So, that person with *purity* should come to the *field*, shouldn't she? Now, is there a question left for you ask? This is why, it has been said: invoke the rosary of victory (*Vijayamala*). Nobody else has this power .

जिज्ञासुः अब तक वो नास्तिक....

बाबाः रहना चाहिए या नहीं रहना चाहिए?

जिज्ञासुः सिर्फ आवाहन करने से नहीं आना है ना बाप। स्टेज बनना है ना।

बाबाः बाप को आवाहन करने की बात नहीं है। विजयमाला को आवाहन करने की बात बताई। बाप तो आवाहन करने से आता ही नहीं।

जिज्ञासुः लेकिन विजयमाला की हेड तो आवाहन करने से नहीं आ रहा है ना।

बाबाः क्यों नहीं आयेगी? वो मनुष्यात्मा है या परमात्मा या परमपिता है? (जिज्ञासु - मनुष्यात्मा है।) मनुष्यात्मा है। मनुष्यात्मा तो योगबल से उनके, उनसे चेंज किया जा सकता है वायब्रेशन को।

जिज्ञासुः स्टेज तो बनना चाहिए ना।

बाबाः हाँ, जी।

Student: Till now he is atheist ...

Baba: Should he have faith or not?

Student: She is not going to come just on being invoked, is she? We have to achieve that stage, shouldn't we?

Baba: It is not about invoking the Father. It was said about invoking the *Vijaymala*. The Father does not come on being invoked at all.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: But the head of *Vijaymala* is not coming on being invoked, is she?
Baba: Why will she not come? Is she a human soul or the Supreme Soul or the Supreme Father? (Student: She is a human soul.) She is a human soul. You can change the vibrations of a human soul through the power of *yoga*.
Student: We should achieve the stage, shouldn't we?
Baba: Yes.

Extracts-Part-4

समयः 23.45-26.05

जिज्ञासुः बाबा, श्रीमत और श्रीमदभगवदगीता का संबंध क्या है?

बाबाः श्रीमदभगवदगीता। यज्ञ के आदि में चले जाईये। और अंत में चले जाईये। श्रीमत है श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ आत्मा की मत। माने शिव ने जो मत दी, किसके द्वारा दी? शिव ने जो श्रेष्ठ मत दी वो किसके द्वारा दी? (जिज्ञासु - माता द्वारा।) माता द्वारा दी। तो माता के द्वारा जो मत दी गई उस श्रीमत के आधार पर जो माता ठहराई जाती है वो माता कौन? (जिज्ञासु - जगदम्बा।) जगदम्बा सहनशक्ति के रूप में माता मानी जाए? (जिज्ञासु - नहीं, ब्रह्मा।) ब्रह्मा ही माता है। लेकिन ब्रह्मा ही संपन्न रूप है क्या? ब्रह्मा का संपन्न रूप क्या है? (जिज्ञासु - जगदम्बा।) नहीं। ब्रह्मा सो विष्णु है। तो वो ही वैष्णवी देवी यज्ञ के आदि में भी थी और अंत में भी मैदान में आएगी। और प्रैक्टिकल में ज्ञान को चरितार्थ करके दिखाएगी। वो शिव परमात्मा का अंतिम तीसरा रूप है जो प्रैक्टिकल करके दिखाएगा। तो प्रैक्टिकल सबसे ऊँचा होता है या मुख से बोलना ऊँचा होता है? (जिज्ञासु - प्रैक्टिकल।)

जिज्ञासुः वो श्रीमदभगवदगीता हो गई?

बाबाः हाँ, जी। श्रीमत भगवद गीता। यही बात तो आज की मुरली में भी आई थी।

Time: 23.45-26.05
Student: Baba, what is the relationship between *shrimat* and *Shrimadbhagwadgita*?
Baba: *Shrimadbhagwadgita*. Go to the beginning of the *yagya*. And go in the end (of the *yagya*). *Shrimat* is the direction of the highest soul, i.e. the directions given by Shiva; through whom did He give it? Through whom did Shiva give that elevated direction? (Student: through the mother.) He gave it through the mother. So, on the basis of the directions given through the mother, the *shrimat*; the one who proves to be the mother; who is that mother? (Student: Jagdamba.) Should Jagdamba be accepted as mother on the basis of the power of tolerance? (Student: No, Brahma.) Brahma himself is the mother. But is Brahma himself the perfect form? Who is the perfect form of Brahma? (Student: Jagdamba.) No. Brahma becomes Vishnu. So, the same *Vaishnavi Devi* was present in the beginning of the *yagya* as well as she will come in the field in the end. And she will bring the knowledge in practice. She is the last and third form of the Supreme Soul Shiva who will set an example [by bringing knowledge] in practice. So, is bringing in practice the highest thing or is speaking through words the highest thing? (Student: bringing in practice.)
Student: She is *Shrimadbhagwadgita*?
Baba: Yes. *Shrimat Bhagwadgita*. This very thing was mentioned in today's murli too.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 26.15-28.10

जिज्ञासुः तुम बच्चे परमधाम को इस सृष्टि पर ला सकते हो। ये कब की बात है? अंत में तीन धाम होता है ना - शान्तिधाम, सुखधाम और कंट्रोल करने के लिए अहमदाबाद। तो आबू में जो तपस्या करते हैं, उसकी बात है या अलग है?

बाबाः तीन मिनी मधुबन बनेंगे। तीन पाण्डव भवन बनेंगे। एक शान्तिधाम, तपस्याधाम। एक सुखधाम। (जिज्ञासु: दिल्ली में।) हाँ, जी। और एक वो धाम जिसे कहेंगे दुखधाम। जहाँ से सारी दुनिया का कंट्रोल होगा। तप ते राज, राज कर नरका। सर्विस फील्ड की स्टेज में जब पहुँचते हैं तो सर्विस करने का भी नशा चढ़ जाता है। बाप कहते हैं वो सर्विस सारी मैं कराता हूँ। तुम तो तमोप्रधान आत्मा हो। तमोप्रधान आत्मा कोई सेवा नहीं कर सकती। लेकिन अहंकार में आते हैं तो ये समझते हैं सारी सेवा हमने की। सारे विश्व को कंट्रोल करने वाले हम हैं। जैसे शास्त्रों में प्रजापिता को अहंकार आता है, प्रजापति को। आखरीन साबित हो जाता है कि तुम विश्व के मालिक नहीं हो। तुम तो बकरे का मुख वाले हो।

जिज्ञासुः माउण्ट आबू में जो तपस्याभूमि है, ये पॉइन्ट इस पर लागू होता है ना। तुम बच्चे इस सृष्टि पर परमधाम को लाते हो।

बाबा: हाँ जी।

Time: 26.15-28.10

Student: You children can bring the Supreme Abode down to this Earth. It is about which time? There are three abodes in the end, aren't there? The Abode of Peace, the Abode of Happiness and the Abode for controlling at Ahmedabad. So, is it about Abu where *tapasya* (penance) will be performed or is it different?

Baba: Three *Minimadhubans* will be formed. Three *Pandav Bhavans* will be formed. One is the Abode of Peace (*shantidhaam*) [i.e.] the abode of *tapasya.* And one is the Abode of Happiness (*sukhdhaam*). (Student said: in Delhi.) Yes. And one is that abode which is called the abode of sorrow (*dukhdhaam*) from where the entire world will be controlled. '*Tap te raaj, raaj kar narka* (by doing *tapasya* they become kings, and hell is brought about after becoming a king.) When they reach the stage of *service field*, they feel intoxicated to do *service* to. The Father says: "It is I who does that *service*. You are a *tamopradhan* soul (dominated by darkness or ignorance). A *tamopradhan* soul cannot do any service." But when they become egotistic, they feel that they have done the entire service. [They think:] it is we who *control* the entire world. For example, it is mentioned in the scriptures that *Prajapita* [i.e.] Prajapati became egotistic. Ultimately, it is proved, 'you are not the master of the world. You are the one with a goat's face.'

Student: The point, 'you children bring the Supreme Abode down to this world' is applicable to the land of *tapasya* in Mount Abu, isn't it?

Baba: Yes.

जिज्ञासुः रुद्र माला में ज्यादा आत्मायें रहती हैं ना। जो आधे पाप आत्मायें होती हैं उनको ज्यादा तपस्या करना पडता है ना।

बाबा: जो ज्यादा पतित बनेंगे उन्हें ज्यादा तपस्या नहीं करनी पडे?

जिज्ञासु: पडता है। माना सभी आत्मायें पहुंचती है ना वहाँ? जो रुद्र माला की आत्मायें है?

बाबा: नम्बरवार।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: फिर सुखधाम में कौन रहेगा? सुखधाम में सिर्फ विजयमाला की ग्रुप हैं ना ?

बाबा: जो पालना योग्य हो वो ही। जो सत्य को प्रेक्टिकल रूप में ग्रहण करने योग्य हों वो ही। सत्य तो एडवांस ज्ञान है लेकिन एडवांस ज्ञान को सिर्फ मुख तक नहीं। एसे नहीं कि जीभ बाहर दिखाई पडे कि बहुत बोलता है, सच्चा बोलता है। नहीं। प्रेक्टिकल जीवन में करके दिखाए।

जिज्ञासु: जोडी भी बनता है ना ।

बाबा: जोडी तो रूप और बसंत की है ना। रूपवान माना याद का पुतला। और बसंत माना दिव्य गुणों की धारणाओं का पुतला। लक्ष्मी-नारायण। नारायण है रूप तो लक्ष्मी है बसंत।

Student: There are more souls [over there] from the *Rudramala* (the rosary of Rudra), aren't there? Half of them (450 thousand souls) are sinful souls; they have to do more *tapasya*, don't they?
Baba: Those who become more impure won't they have to do more *tapasya*?
Student: They have to. It means that all souls reach there (Abu), don't they? The souls of *Rudramala*?
Baba: Number wise (according to their *purusharth*).
Student: Then who will stay in the Abode of Happiness? There is only the group of [souls of] *Vijayamala* (the rosary of victory) in the Abode of Happiness, isn't there?
Baba: The ones who are capable of sustaining [will stay there], those who can assimilate the truth in practice, they alone [will stay there]. The Advance Knowledge is the truth but it shouldn't be limited only to words. It's shouldn't be that the tongue should be visible [and people think:], 'this one speaks a lot, he speaks truth'. No, he should bring it in practice in his life.
Student: Pairs are also formed, aren't they?
Baba: The pair is of *ruup* and *basant*, isn't it? *Ruupvaan* means the idol of *yaad* (remembrance) and *basant* means the idol of assimilation of divine virtues. Lakshmi - Narayan. Narayan is *ruup* and Lakshmi is *basant*.

समयः 41.05-42.12

जिज्ञासुः एक मुरली में एक प्वाइंट है अंत में सात दिन के लिए राम को रावण बनना पड़ता है, विनाश के समय। इसका मतलब क्या है?

बाबाः इसका मतलब ये है कि सातों नारायण के नीचे जो भी जेनरेशन है और-और धर्मवंशियों की वो सब अपना बाहुबल का आखरी वार करकरके थक जाती हैं। तब अंत में वो निगेटिविटी का वार जो है राम वाली आत्मा अपने हाथ में लेती है। विष से विष मारना है। लोहे से लोहा काटना है। और सारे संसार के जो भी विषैले जीव-जंतु हैं, लोहे समान जिनकी बुद्धि है, पत्थरबुद्धि, उनको काटने का काम वो राम-कृष्ण की आत्माएँ करती हैं।

Time: 41.05-42.12
Student: There is a point in murli, in the end Ram has to become Ravan for seven days at the time of destruction. What does it mean?
Baba: It means that the *generation* (i.e. population) of the people of the dynasties of other religions under the seven Narayans, become tired after their final attack of physical power. Then, in the end, the soul of Ram takes [the task to] attack in *negativity* in his own hands. Poison has to be removed through poison. Iron has to be cut with iron. And the task of cutting (i.e. destroying) the ones with a stone-like intellect, iron-like intellect and all the poisonous living creatures of the entire world is performed by the souls of Ram and Krishna.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Extracts-Part-5

समयः 42.20-50.10

जिज्ञासुः सतयुग में जो जन्म देती है, माना संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण जैसे जो होते हैं, बच्चे उसमें जो जन्म लेने वाला वो प्रवेश करते हैं। प्रवेश करते हैं ना जन्म लेने वाला।

बाबाः यहाँ बुद्धि रूपी पेट में प्रवेश होता है, संगमयुग में और वहाँ सतयुग में स्थूल पेट में प्रवेश होकर के जन्म लेना पड़ता है।

जिज्ञासुः लेकिन जब प्रवेश करता है तो उनको मालूम पड़ता है क्या वो प्रवेश किया है?

बाबाः प्रवेश करेगा कैसे? उनको अपना घोड़ा मिलेगा तभी तो प्रवेश करेगा। पावरफुल में प्रवेश होता है या कमजोर में प्रवेश होता है? (जिज्ञासु: प्रवेश कमजोर में होता है।) कमजोर आत्मा में तब तक प्रवेश होगा जब तक वो कमजोर है। माना रामवाली आत्मा जब तक कमजोर है तब तक देहभान रूपी गधा उसमें सवारी करता रहेगा। गधा कहो, बैल कहो, कुछ भी कहो। और जैसे ही रामवाली आत्मा बीजरूपी स्टेज को परिपक्व रूप से धारण करेगी वो छलांग लगाके बैल के ऊपर सवार हो जाएगा।

Time: 42.20-50.10

Student: Those who give birth in the Golden Age, i.e. the ones like the Confluence Age Lakshmi and Narayan, those who are born from them enter them. Those who are to born from them enter them, don't they?

Baba: Here, in the Confluence Age, they enter the womb-like intellect and there in the Golden Age, they have to enter the physical womb to be born.

Student: But when they enter, do they come to know that they have entered?

Baba: How will they enter? They will enter only when they get their horse (i.e. body). Does a soul enter a *powerful* one or a weak one? (Student: the soul enters a weak one.) It will enter a weak one as long as it is weak. It means that the donkey-like body consciousness will ride the soul of Ram as long it is weak. Call it a donkey, call it a bull; you may call it anything. And as soon as the soul of Ram achieves the mature seed-form stage, it will take a high jump and ride on the bull.

जिज्ञासुः मगर अभी ब्रह्मा प्रवेश करते हैं ना बाप में।

बाबाः तो ये जो पार्ट है जिस पार्ट के बारे में इतना अनिश्चयबुद्धि हो रहे हैं वो मूल रूप में कारण कौन है? राम वाली आत्मा कारण है या कृष्ण वाली आत्मा कारण है? विकारों का बीज कौन है? (जिज्ञासु - बाप।) नहीं। देहभान। (जिज्ञासु: देहभान या काम विकार?) काम विकार तो... (जिज्ञासु: देह अभिमान।) हाँ, जी। रावण को दस शीश दिखाए जाते हैं। दस शीशों में मुख्य शीश है काम विकार। और काम विकार को भी पैदा करने वाला बाप कौन है? गधा।

जिज्ञासुः कौन हुआ? ब्रह्मा? गधा कौन हुआ?

बाबाः अरे पांच विकारों का बाप कौन है? अरे माता और पिता दो ही तो सारी सृष्टि के बीज हैं कारण। (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) हाँ। तो 'अहम् बीज प्रदःपिता' कारण है या माता कारण है? (जिज्ञासु - पिता।) पिता कारण है काम विकार पैदा करने वाला? अरे, देहभान माताओं में ज्यादा

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

होता है या पिता में होता है? (जिज्ञासु - माता।) धरणी में देहभान ज्यादा है या सूर्य में देहभान है?

Student: But now Brahma enters the father, doesn't he?
Baba: So, who is the main reason for this part, for which people are developing such a doubtful intellect? Is the soul of Ram the reason or is the soul of Krishna the reason? Who is the seed of the vices? (Student: The father.) No. Body consciousness. (Student said: is it body consciousness or the vice of lust?) The vice lust… (Student said: body consciousness.) Yes. Ravan is shown to have ten heads. The main head among the ten heads is lust. And who is the father who gives birth to lust as well? The donkey.
Student: Who is it? Brahma? Who is the donkey?
Baba: *Arey*, who is the father of the five vices? *Arey*, the reason (cause) for the entire creation are only two, the mother and the father. (Student said something.) Yes. So, is '*Aham beej pradahpita'* (I am the father of this human world who sows the seed) the reason or is the mother the reason? (Student: the father.) Is the father the reason for creating lust? *Arey*, do the mothers have more body consciousness or do the fathers have more body consciousness? (Student: Mother.) Is there more body consciousness in earth or in the Sun?

जिज्ञासुः धरणी में होता है, लेकिन एक प्वाइंट है कि सभी पुरुष दुर्योधन-दुःशासन हैं।
बाबाः पुरुष। पुरु, ष। जो शरीर रूपी पुरी में निवास करता है। दो आत्मायें हैं शरीर रूपी पुरी में निवास करने वाली। एक है शिव, वो भी आत्मा है। और एक है राम वाली आत्मा। कंट्रोल कौन करता है और कंट्रोल्ड होने वाला कौन है?
जिज्ञासुः कंट्रोल करने वाला शिव है।
बाबाः तो किसकी बात प्रधानता में मानी जाएगी?
जिज्ञासुः कंट्रोल करने वाले की।
बाबाः ज्ञानी आत्मायें किसको देखेंगी?
जिज्ञासुः शिव को देखेंगी।
बाबाः फिर? शिव ने तो जिसको चुनना था चुन लिया। श्रेष्ठ को चुना होगा या धर्मपिताओं की तरह नंबरवार भ्रष्ट को चुना होगा? ऊँच ते ऊँच बाप को जरूर ऊंच ते ऊँच में प्रवेश करना पड़े। ये मुरली का महावाक्य क्या साबित करता है? मनुष्य सृष्टि भले ये फैसला न कर पाए, मनुष्यात्मायें भले ये फैसला न कर पाये 63 जन्मों में कि ऊँच ते ऊँच पार्टधारी कौन? लेकिन वो ये फैसला करके आता है।
Student: Earth has more body consciousness, but there is a point that all men are Duryodhan and Dushasan.
Baba: Men (*purush*). *Puru, sh*; the one who resides in the abode in the form of body (*puri*). There are two souls which reside in the abode in the form of body. One is Shiva; He is also a soul. And one is the soul of Ram. Who controls and who is *controlled*?
Student: The one who controls is Shiva.
Baba: So, whose version will be given importance?
Student: Of the one who controls.
Baba: Whom will the knowledgeable souls see?
Student: They will see Shiva.
Baba: Then? Shiva selected the one whom He had to select. Would He have selected a righteous one or would He have selected *number wise* unrighteous ones like the religious fathers? The

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

highest Father will definitely have to enter the highest one. What does this version of murli prove? Though the human world may not be able to decide, though the human souls may not be able to decide in the 63 births, who is the highest actor? But He comes after making this decision.

जिज्ञासुः माता में देहभान जास्ती होता है बाबा लेकिन पुरुषों को दुर्योधन दुशासन कहते हैं ना बाबा।

बाबाः दुर्योधन-दुःशासन किस आधार पर कहते हैं?

जिज्ञासुः चोला के आधार पर।

बाबाः नहीं। काम विकार के आधार पर दुर्योधन-दुःशासन कहते हैं। माताओं में काम विकार उतना तीव्र नहीं होता है। काम की मार करने वाली मोस्ट्ली मातायें नहीं होती हैं। पुरुष होता है, पुरुष चोला होता है। यहाँ हम ज्ञान में चलने वाले चोले को नहीं देखते। क्या देखते हैं? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) हम राम वाली आत्मा देखते हैं या स्त्री पुरुष का चोला देखते हैं? अगर चोला भी देखते हैं तो अनेक जन्मों के आधार पर देखना हैं या दो-चार जन्मों के आधार पर देखना है? (जिज्ञासु- अनेक जन्मों के आधार पर।) अनेक जन्मों के आधार पर देखना है। भले चोला हम देखते हैं, अनेक जन्मों के आधार पर। अनेक जन्मों के आधार पर वो आत्मा सबसे जास्ती पतित कामी कांटा बन गई। उस कामी कांटे को कामी कांटा बनाने के निमित्त कौन हुआ? (जिज्ञासु - माता।)

Student: Baba, mothers have more body consciousness, but men are called Duryodhan and Dushasan, aren't they Baba?

Baba: On what basis are they called Duryodhan and Dushasan?

Student: On the basis of the body.

Baba: No. They are called Duryodhan and Dushasan on the basis of lust. The vice lust is not so intense in the mothers. *Mostly*, it is not the mothers who instigate the attack of lust. It is the man, the male body [which instigates the attack of lust]. Here, we who follow the path of knowledge do not see the body. What do we see? (Student said something.) Do we see the soul of Ram or do we see the body of female and male? Even if we see the body, should we see that on the basis of many births or on the basis of two-four births? (Student: On the basis of many births.) We have to see it on the basis of many births. Although we see the body, [it should be seen] on the basis of many births. That soul became the most sinful, lustful thorn on the basis of many births. Who became instrument to make that lustful thorn a lustful thorn? (Student: Mother.)

जो इस्लामियों में और मुसलमानों में कहावत आती है, कहानी आ रही है कि एडम और ईव को खुदा ने जन्नत दी। जन्नत के बगीचे में भेज दिया। लेकिन एक पख लगा दी। 'इस गंधुम फल को नहीं खाना।' और ईव का दिल डिग गया। और उसने फल खा लिया। तबसे नीचे गिरना हो गया। तो एडम और ईव के बीच में आत्मिक स्थिति की प्रैक्टिस करने वाला जास्ती कौन है? (जिज्ञासु - एडम।) एडम जो बीज है आटोमेटिकली। जड़ को बीज नहीं कहा जा सकता। बीज का कनेक्शन धरणी से ज्यादा होता है या जड़ का कनेक्शन धरणी से ज्यादा होता है? जड़ ज्यादा समय तक लंबे समय तक आदि से लेकर अंत तक धरणी के संपर्क-संसर्ग में रहती है। और बीज तो थोड़े समय के लिए संपर्क में आता है और अपने को खाक में मिला देता है। फिर

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

5000 वर्ष के बाद फिर वो ही बीज तैयार होगा, प्रत्यक्ष होगा। उसके बीच में कोई भी उस बीज को पहचान नहीं पाता।

There is a saying, a story among the people of Islam and Muslims that God gave heaven to Adam and Eve. He sent them to the garden of heaven. But he laid a condition. Do not eat the *gandhum* fruit[5]. Eve's heart became inconstant and she ate the fruit. Downfall started ever since then. So, who in between Adam and Eve practiced the soul conscious stage more? (Student: Adam.) It is *automatically* (naturally) Adam who is the seed. The root cannot be called seed. Is the seed connected more with the earth or is the root connected more with the earth? The root remains in contact and connection with the earth for a longer time from the beginning till the end. And the seed comes in contact with the earth for a short period and mixes itself with the soil. Then, the same seed will become ready again and will be revealed after 5000 years. Nobody is able to recognize that seed between that period.

समयः 57.07-01.00.10

जिज्ञासुः ब्रहमा को जास्ती स्त्री का चोला लेना पड़ता है ना द्वापर से। माना जो माता का पार्ट बजाया संगम में।

बाबाः जिसमें माता के संस्कार ज्यादा होंगे उसको माता के जन्म ज्यादा लेने पड़ेंगे क्योंकि संस्कार भरने का समय कौनसा चल रहा है? संगमयुग। संगमयुग है जन्म-जन्मान्तर के संस्कार भरने का युग। यहाँ जो ज्यादा सहनशक्ति धारण करेगा वो जन्म-जन्मान्तर सहन शक्ति धारण करने वाली माता का पार्ट बजाएगा। उसमें अव्वल नंबर... (जिज्ञासु - ब्रहमा।) ...ब्रहमा नहीं। ब्रहमा तो थोड़े समय के लिए पालना का पार्ट बजाया। और थोड़ों का पार्ट बजाया। और ब्रहमा अधूरा रूप है या संपूर्ण रूप है? फिर संपूर्ण रूप कौन है? (जिज्ञासु - विष्णु।) वैष्णवी। वो सबसे जास्ती स्त्री चोले धारण करेगी। कम से कम एक जन्म लगातार स्त्री या पुरुष का मिल सकता है। और ज्यादा से ज्यादा दो जन्म लगातार स्त्री या पुरुष के मिल सकते हैं।

Time: 57.07-01.00.10

Student: Brahma has to take on female body more from the Copper Age, doesn't he? I mean the one who played the part of mother in the Confluence Age.

Baba: The one who has more *sanskars* of mother will have to take more births as a mother because, which is the time for recording the *sanskars*? The Confluence Age. The Confluence Age is the Age of recording the *sanskars* for many births. The more someone inculcates the power of tolerance here, the more he will play the part of a mother who inculcates the power of tolerance for many births. The *number* one in that… (Student: Brahma.) …Not Brahma. Brahma played the part of sustaining for a short period. And he played that part for a few souls. And is Brahma an incomplete form or a complete form? Then who is the complete form? (Student: Vishnu.) Vaishnavi. She will take on female body [for] the most [number of births]. One can get a female or male birth continuously for one birth minimum. And one can get maximum two consecutive births as female or male.

तो ऐसी भी कोई आत्मा होगी जो 500 करोड़, 700 करोड़ मनुष्यात्माओं के बीच में सबसे जास्ती स्त्री चोले धारण करती है। और सबसे जास्ती सहनशक्ति का पार्ट बजाती हो। नहीं तो दो रानियाँ जहाँ आपस में मिलती हैं, कितना झगड़ा फसाद पैदा कर देती हैं परिवार में। और वो

[5] Wheat; myth: the apple fruit, (the body fruit) found in *jannat*

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

तो हज़ारों हज़ार पद्मिनी रानी की कहानी है। हज़ारों रानियाँ थीं और एक कंट्रोलर थी। कितना सहन करना पड़ता होगा? विकारी दुनिया थी या निर्विकारी दुनिया थी? विकारी दुनिया थी। वो विकारी दुनिया के बीच में, उन विकारी रानियों के काया, कर्म, कृति, पार्ट देखती नहीं होगी क्या? देखती थी, समझती थी। फिर भी, सहनशीलता से पार्ट बजाती थी या उखड़ पड़ती थी? (जिज्ञासु - सहनशीलता से।) सहनशीलता से पार्ट बजाती थी।

जिज्ञासुः लेकिन जो दाढी मूंछ वाला ब्रह्मा है वो जो पार्ट बजाया वो सहनशीलता का पार्ट नहीं है ?

बाबाः परन्तु लगा हुआ है। ये ब्रह्मा वास्तव में तुम्हारी जगदम्बा है **परन्तु**...। खत्म।

So, there will also be such soul who takes on female body for the maximum [births] than anyone else among 5 - 7 billion human souls and plays the part of tolerance the most. Otherwise, if two queens live together they create so many fights in a family. Whereas, there is a story of thousands of queens [like] the Queen Padmini. There were thousands of queens and one *controller*. She would have to tolerate so much [at that time]. Was it a vicious world or a vice less world? It was a vicious world. Amidst that vicious world, would she not be seeing the bodies, actions, acts, parts of those vicious queens? She used to see, she used to understand. Yet, did she play the part with tolerance or did she use to become displeased? (Student: With tolerance.) She played her part with tolerance.

Student: But isn't the part played by Brahma with beard and moustache the part of tolerance?

Baba: 'But' has been added. This Brahma is your Jagdamba in reality, **but**... It ends there.

…………………………………………………………………………………………………

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.